जय-जय भैरवि असुर भयाउनि

पशुपति भामिनी माया

सहज सुमति वर दियउ गोसाउनि

अनुगति गति तुअ पाया

वासर रैनि सबासन शोभित

चरण चन्द्रमणि चूड़ा

कतओक दैत्य मारि मुख मेलल

कतओ उगिलि कएल कूड़ा

सामर बरन नयन अनुरंजित

जलद जोग फुलकोका

कट-कट विकट ओठ पुट पांडरि

लिधुर फेन उठ फोंका

घन-घन-घनय घुंघरू कत बाजय

हन-हन कर तुअ काता

विद्यापति कवि तुअ पद सेवक

पुत्र बिसरू जनि माता

‘जय जय भैरवि असुर भयाउनि’ कविता कवि ‘विद्यापति’ द्वारा रचित कविता है। इस कविता के माध्यम से कवि ने माँ जगदंबा के विभिन्न रूपों का गुणगान किया है। वह इस कविता के माध्यम माँ जगदंबा की वंदना करते हुए कहते हैं कि हे माँ! असुरों के लिए तो आप भयानक और काल का रूप हैं, परंतु अपने पति शिव की प्रेयसी हैं यानी आप जहाँ अत्याचारियों के लिए आप काल के समान है तो वही प्रेम और दया की मूर्ति भी हैं। जहाँ आपका एक पैर दिन-रात शवों के ऊपर रहता है, वहीं दूसरी तरफ आपके माथे पर चंदन का मंगल टीका भी सुशोभित है, जो मंगल का प्रतीक है।

हे माँ भगवती! आपके विभिन्न रूपों का इतना अच्छा वर्णन शायद ही कहीं मिले। जहाँ आपका एक रूप सौम्य है, तो दूसरा रूप विकराल। आपके कमर पर घुंघरू की घन-घन प्रतिध्वनि बज रही है, तो हाथ में खड़ग है। इस तरह आप के अनेक रूप हैं। आप वीरता और शौर्य का प्रतीक है, तो प्रेम और दया की साक्षात मूर्ति का भी प्रतीक हैं।

इस कविता में कवि ने माता का गुणवान वीर रस और श्रंगार रस दोनों रसों में किया है

अर्थात -

राक्षसों को आतंकित करने वाली भैरवी शिवानी तुम्हारी जय हो! तुम्हारे चरण-युगल ही इस दास के लिए एकमात्र सहारा हैं... देवि, मैं तुमसे ‘सहज-सुबुद्धि' की ही वरदान के रूप में याचना कर रहा हूँ। दिन-रात तुम्हारे चरण शव-आसन पर शोभित हैं... तुम्हारा सीमंत चंद्रमणि से अलंकृत है... कितने ही दानवों को मारकर तुमने अपने मुँह के अंदर डाल लिया, कितने ही दानवों को तुम हज़म कर गई हो... उगल दिए जाने पर कितने ही दानव सीठी (निःसत्त्व) बनकर धूल में मिल गए हैं। तुम्हारी सूरत साँवली है। आँखें लाल-लाल हैं। लगता है, बादलों में लाल-लाल कमल खिले हैं। पंखुड़ियों जैसे होंठ हैं तुम्हारे, जिनसे कट-कट की विकट आवाज़ निकल रही है। ख़ूनी रंग के झाग बुलबुले पैदा कर रहे हैं। मेखला (करधनी) के घुँघरुओं से झन-झन-झनन घन-घन-घनन की मीठी आवाज़ निकल रही है। तुम्हारी कृपाण प्रहार करने के लिए हमेशा तैयार रहती है... । तुम्हारे चरणों का सेवक विद्यापति कवि कहता है–“माता, पुत्र को कभी नहीं भूलो!”